।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

भगवन् ! मैं प्रातःकाल की पवित्र वेला में आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ। वन्दना का अभिप्राय है कि मैं अपने हृदय को उज्ज्वल बना रहा हूँ। आपकी शुद्ध पवित्र अमृत सम्वेदना के साथ प्रभु ! मैं अपने हृदय को निर्मल और स्वच्छ जल से स्वच्छ बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु ! तेरा जो अमृतमयी ज्ञान है, अमृतमयी जो तेरी नम्रता है, अमृतमयी जो तेरी उदारता है, अमृतमयी जो तेरा उद्गम है, अमृतमयी जो हृदय है, अमृतमयी जो तेरा यह जगत् है, अमृतमयी जो प्रभु मेरी ज्ञान की एक कामना है उससे मैं अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु ! तू कितना उद्गम है, तू कितना उदार है, तू कितना महान् है, तू कितना व्यापक है, तेरी कितनी उज्ज्वलता प्रभु ! इस सँसार में व्यापक रही है। हे प्रभु ! तुम कितने व्यापक हो और मैं कितना अल्पज्ञता में रमण करता हूँ। मुझे यह प्रतीत नहीं है कि इससे आगे मुझे क्या भोजन प्राप्त होगा। परन्तु प्रभु ! आप मेरे उस भोजन को भी जानते हैं जो आगे आने वाला भोजन मुझे प्राप्त होगा। उनमें जो अमृत मुझे प्राप्त होगा उसको भी आप स्वतः जानने वाले हैं, परन्तु मेरे लिए कोई मार्ग ऐसा नहीं, मेरे लिए कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ प्रभु ! मैं पाप कर्म करने के लिए उद्यत हो जाऊँ। प्रभु ! वह कौन सा स्थान है जहाँ मैं पाप कर्म कर सकता हूँ। परन्तु प्रभु ! पाप मैं उस काल में करता रहता हूँ, जब प्रभु ! आपका जो आनन्दमयी स्रोत है वह मेरे से पृथक हो जाता है। मैं उस आनन्दमयी जो ज्ञान है, अमृतमयी जो पवित्रवत् है मैं उसको अपने से दूर नहीं चाहता। हे जगत् रचन् अस्वनम्। प्रभु मैं आपको बारम्बार नमस्कार कह रहा हूँ। आप मेरी इस प्रातःकाल की नमः को स्वीकार करो क्योंकि आप उदार हैं, महान हैं, पवित्र हैं, शुद्ध हैं, आनन्दवत स्रोत हैं। हे प्रभु ! इसलिए मैं आपको बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक : 514	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अँक : 589
वर्ष : 43	44	समग्र वर्ष : 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	आत्मा का प्रकाश	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-21
4.	यौगिक मार्ग	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-32
5.	श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा	पूज्यपाद-गुरुदेव	33-36
6.	ऋषियों के उद्गार	पूज्यपाद-गुरुदेव	37
7.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		38-43

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि की अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

।। ओ३म् ।।

आत्मा का प्रकाश

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ यह पाठ्यक्रम परम्परागतों से ही विचित्रत्व में परणित रहा है क्योंकि यह अमृत है और जब मानव इस स्वरसंगम में उतर के अपने प्रभु का गुणगान गाता है और वेदमन्त्रों की जब जटा पाठ, धनपाठ में स्वर संगम हो जाता है तो मानव अपने में रत्त हो जाता है और वह प्रकाश को दृष्टिपात करता रहता है। क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों की एक विचित्र देन रही है क्या उन्होंने ब्रह्माण्ड को पिण्ड से और पिण्ड को ब्रह्माण्ड से और ब्राह्मण्ड और पिण्ड दोनों को चेतना में कटिबद्ध किया है और परमपिता परमात्मा से उसका समन्वय किया है जिससे मानव गम्भीरता से उसके ऊपर विचार-विनिमय कर सके।

हमारे यहाँ यह कहा गया वेदाम् भवि वर्णनं प्रकाशं ब्रव्हे **ये जो वेद है यह प्रकाश का पुञ्ज है और यह प्रकाश के देने वाला है।** हम जब बाल्य काल में अपने आचार्यों के समीप वेद का अध्ययन करते थे तो जब वह वेद की विवेचना करते हुए कहा करते कि यह प्रकाश है। तो हम अपने पूज्यपाद गुरुओं से यह प्रश्न करते कि आप तो प्रकाश सूर्य को कहते हो यह वेद कैसा प्रकाश है? तो पूज्यपाद इसका उत्तर दिया करते कि जैसे बाह्य जगत् में यह सूर्य नेत्रों का प्रकाश है इसी प्रकार यह जो वेद रूपी प्रकाश है यह मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित करता है, इससे मानव का अन्तः जो जगत है, अन्तःकरण प्रकाशित हो जाता है। तो इसीलिए हमारे यहाँ वेदाम् प्रकाशाम् भवे वर्णस्सुतम् देवाः यह प्रकाश का पुञ्ज है और प्रत्येक मानव प्रकाश

चाहता है, अन्धकार नहीं चाहता। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा लगी रहती है कि मैं प्रकाश को प्राप्त हो जाऊँ, मेरे जीवन में अन्धकार न आए, मैं प्रकाश के पुञ्ज में चला जाऊँ। तो मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक मानव को प्रकाश के लिए सदैव रत्त रहना चाहिए क्योंकि वह परमपिता परमात्मा जितना भी जड़ जगत और चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्राह्मण्ड के मूल से वह विद्यमान रहते हैं मानो उसकी प्रतिभा एक महानता में परणित रही है।

आओ मुनिवरो! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चाएँ नहीं कर पाऊँगा केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है। वेदमन्त्र में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महान हैं और वह प्रकाशित हैं, वह प्रकाश के देने वाले हैं और वह मानो देखो पूर्वा में पूर्वा द्वियम् ब्रह्मा अग्नम् ब्रव्हे वह अग्नि के स्वरूप में रहते हैं। तो उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव हम गुणगान गाते रहें क्योंकि यह ब्रह्माण्ड को रचना में लाने वाले वह परमपिता परमात्मा को ही स्वीकार किया गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके क्योंकि वह सीमा से रहित हैं और सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसीलिए उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव हम गुणगान गाते रहते हैं और प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मैं परमात्मा को प्राप्त हो जाऊँ। नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है, द्रव्य को एकत्रित करता रहता है परन्तु उसमें एक आत्म पिपासा रहती है कि मुझे सुखद प्राप्त हो जाए। नाना प्रकार की ख्याति में प्रसिद्ध हो जाता है और वह सदैव यह चाहता है कि मुझे आनन्द की प्राप्त हो, मैं प्रकाश में चला जाऊँ अन्धकार मेरे समीप न आ पाये। प्रत्येक मानव मानो परम्परागतों से अपने में अन्वेषण करता रहा है। महात्माजन बेटा! तपस्या में परणित हो जाते हैं।

अंगिरस ऋषि

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब अंगिरस ऋषि अपने में बेटा! वायु का सेवन कर करके वह अपने में मौन रह करके और अपने अन्तःकरण में नाना जन्मों के संस्कारों को जागरूक करते रहे। उनका तारतम्य यही था, यही चाहते थे कि मेरे अन्तःकरण में जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हैं मैं उनको उद्बुद्ध करता रहूँ और यह उद्बुद्ध करके मैं जानू और देखो मैं सुखद हो जाऊँ, मेरा अंगत्व में मैं परणित हो जाऊँ।

महात्मा अर्द्धभाग का अध्ययन

आओ मेरे प्यारे! तो प्रत्येक मानव की ये परम्परागतों से आकांक्षा रहती है क्या मैं अपने में प्रकाश में चला जाऊँ। इस सम्बन्ध में तुम्हें एक कथानक वार्ता में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो राजा जनक के यहाँ नाना ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हो करके ब्रह्म का बखान करते रहे हैं और देखो वह स्वतः अपने क्रियाकलापों में बड़े विचित्रत्व में रत्त रहे हैं। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहा है एक समय महात्मा अर्द्धभाग अपने आसन पर विद्यमान थे। तो महात्मा अर्द्धभाग एक वेदमन्त्र का अध्ययन कर रहे थे और वेदमन्त्र था प्रकाशाम् भविताणाम् ब्रव्हे व्रतम् सूर्य असुचतम् ब्रव्हा व्रतम् चन्द्रमाम् ब्रव्हे क्रतम् देवत्वाम् प्रकाशाः तो एक वेदमन्त्र का अध्ययन कर रहे थे और यह अपने में विचार रहे थे कि मैं प्रकाश में जाना चाहता हूँ परन्तु प्रकाश क्या है। कहीं तो प्रकाश सूर्य का वाची और कहीं मानो वही चन्द्रमा का वाची बन रहा है वही कहीं बेटा! तारामण्डलों का वाची है। परन्तु देखो अपने में यह चिन्तन करते हुए उन्होंने विचारा अमृतम् देखो न्योदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन करने लगे और वेदमन्त्रों में आ रहा था यम तम ब्रह्मा वर्णम् त्वा कृतम् देवाः अभ्यम् देवत्वम् अग्नि ब्रह्मणा लोकाम् वाचस्सुतम् देवत्वाम् लोकाः ऐसा वेद का ऋषि अपने में अध्ययन कर रहा था। परन्तु सायँकाल का समय था वह वहाँ से अपने आसन से प्रस्थान करते हुए और वह राजा जनक

के गृह में उनका वास हुआ। मेरे प्यारे! उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने उनका बड़ा स्वागत किया और उनको आसन दिया। वह आसन पर विराजमान हो गये। मेरे प्यारे! देखो उनका आंगनम व्रते विश्राम कक्ष था जहाँ वह विचार-विनिमय करते रहे। मेरे प्यारे! वह कुछ वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहे न्योदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते यम सम ब्रह्मा कृतम् देवत्वाम् अभ्यम् ब्रह्मा यसुतम् देवत्वाम् सूर्यम् गम ब्रव्हा वाचम् लोकाम् भुर्स्तत्वम् ब्रहे ऐसे वेदमन्त्रों का वह उद्गीत गाते रहे परन्तु गाने के पश्चात् रम्भेश्वरी निद्रा में तल्लीन हो गई। महात्मा अर्द्धभाग ने उस आसन को त्याग करके अपने आश्रम को प्रस्थान किया। मेरे प्यारे! देखो अपने आश्रम में जा पहुँचे।

रम्भेश्वरी देवी का चिन्तन

परन्तु देवी रम्भेश्वरी और जब मध्यरात्रि में निद्रा से जागरूक हो गई। वही वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आने लगे और वेदमन्त्रों में गान गाने लगीं प्रकाशाम् मम् व्रते देवत्वाम् सूर्या यम ब्रह्मा विष्णु ब्रहे व्रतम् प्रकाशाम् भविते असुतनम् ऐसा वेदमन्त्रों का जब उद्गीत गाने लगी तो अपने में अन्वेषण करने लगी कि यह क्या है और यह प्रसंग आया कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह वेदमन्त्रों में जब इस प्रकार का प्रसंग आया क्या हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं तो बेटा। देखो विचार-विनिमय करके अपने में निपटारा नहीं कर सकीं। देखो रात्रि का अन्तिम चरण रह गया। अन्तिम चरण रहने के पश्चात् देवी ने विचारा मैं अपने देव राजा जनक के कक्ष में पहुँचूं और विचार-विनिमय करेंगे कि वेदमन्त्र मिथ्या तो हो नहीं सकता और वेदमन्त्र कहता है प्रकाशाम् भविते ब्रह्मणं ब्रव्हा कृतो प्रकाशाः हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं ऐसा मानो वेदमन्त्र बेटा! प्रश्न भी कर रहा है और उत्तर भी दे रहा है।

राजा जनक और रम्भेश्वरी देवी का विचार विमर्श

रम्भेश्वरी ने अपने कक्ष को त्याग करके वे राजा जनक के द्वार

पर पहुँची। राजा जनक अपनी निन्द्रा में तल्लीन थे। वह जागरूक हो गये और उन्होंने कहा रम्भेश्वरी यह क्या कारण है तुम रात्रि के अन्तिम चरण में मेरे समीप, मेरे कक्ष में तुम्हारे आने का अभिप्रायः क्या है? रम्भेश्वरी ने कहा यम ब्रव्हे कृतम् अप्रतम् मम्भावृति देवत्वाऽम् हे प्रभु वेदमन्त्र कहता है प्रश्न कर रहा है कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। मेरे प्यारे! देखो राजा जनक ने कहा देवी विराजो। दोनों का विचार-विनिमय होने लगा। राजा ने कहा देवी यहाँ तो सूर्यवाची बन रहा है। जब उन्होंने कहा कि सूर्य तो भौतिक है परन्तु यह तो विज्ञान का दूत कहलाता है। प्रकाशाम् भविते प्रकाशाम् नेत्राः यह नेत्र, कौन प्रकाश देता है नेत्रों को? मेरे प्यारे! इसी विचार-विनिमय में मानो उनका देखो दिवस, सूर्य उदय होने लगा। सूर्य उदय हो गया, अपने कक्ष को त्याग दिया अपनी क्रियाओं से निर्वृत हो करके।

राजा जनक की यज्ञशाला

मेरे प्यारे! देखो उनकी यज्ञशाला थी और उस पर अपने-अपने स्थान पर ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हो जाते प्रातः कालीन और वहाँ वह प्रातःकालीन याग करते, अग्नि देवता को अग्नम् ब्रह्मे देखो उसका अपना चरू प्रदान करके मुखारबिन्दु में उसके पश्चात् वह ब्रह्मवेत्ताओं से कुछ वार्ता प्रगट करते थे। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है राजा जनक और रम्भेश्वरी अपनी क्रियाओं से निवृत हो करके यज्ञशाला में पहुँचे। तो यज्ञशाला में देखो महात्मा अर्द्धभाग विद्यमान हैं कहीं महात्मा दिग्ध हैं, कहीं महात्मा अश्वल हैं उनके पुरोहितजन और कहीं मुनिवरो! देखो अमृतम् देवः देखो ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु, महर्षि शिलक, महर्षि दालम्य और महर्षि व्रेतकेतु और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे। परन्तु सबसे ऊर्ध्वा आसन पर विराजमान होने वाले महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज थे। मेरे प्यारे! देखो दोनों ने अपनी यज्ञशाला में अग्नि को प्रदीप्त किया। वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए अग्नि प्रचण्ड हो गई। तो बेटा! देखो अग्न्याधान करने के पश्चात् राजा

जनक ने यह अपने में निश्चय कर लिया कि आज मैं आचार्य से कोई प्रश्न नहीं करूँगा।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि और राजा जनक रम्भेश्वरी देवी का सम्वाद

मेरे प्यारे! जैसे ही उनका याग सम्पन्न हुआ तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले क्या मेरे से यजमान कोई प्रश्न कर सकता है। बेटा! दोनों बड़े प्रश्न हुए और महर्षि अर्द्धभाग ने खन्तम् ब्रह्मे उनसे कहा कहो राजन् प्रश्न करो। मेरे प्यारे! देखो वहाँ अमृते माता रम्भेश्वरी राजा जनक ने, दोनों ने नत मस्तिष्क हो करके कहा प्रभु यह वेदमन्त्र हमें देखो रात्रि तक, रात्रि समाप्त हो गई इस वेदमन्त्र के आश्रय को नहीं जान सके हैं। वेदमन्त्र कहता है प्रकाशाम् भविवर्णन् प्रकाशाम् भविते सूर्य अस्वतम् ब्रव्हा कृतम् चन्द्राः हे प्रभु वेदमन्त्र कहता है कि हम किस के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं परन्तु वेदमन्त्र यह उत्तर भी दे रहा है कि सूर्य हमारा प्रकाशक है। तो हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि हमें प्रकाश के देने वाला कौन है, कौन प्रकाश को देता है?

सूर्य का प्रकाश

मुनिवरो! राजा जनक के इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा हे राजन् इसको प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक बाल्य जानता है कि हमारे जो नेत्र हैं वो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह सूर्य का प्रकाश आता है और रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है चन्द्रमा मानो देखो अपने में द्विज बन जाता है। अमृतम् ब्रह्मा देखो यह सूर्य का प्रकाश है यह नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता है, प्रकाश देता है और ऊर्ध्वा में देखो हम संसार के क्रियाकलापों में तत्पर हो जाते हैं। मानो देखो मेरी प्यारी माताएँ अपने पुत्रों को जागरूक कर लेती हैं—हे बाल्य आओ, भानु उदय हो गया है, प्रकाश आ गया है इस प्रकाश में तुम अपने क्रियाकलापों से रत्त हो जाओ। मेरे पुत्रों! देखो माताएँ, आचार्यजन् विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को कहते हैं हे ब्रह्मवर्चोसी जागरूक हो जाओ यह सूर्य उदय हो गया है, प्रकाश आ गया है। मानो

देखो यह प्रकाश से वनस्पतियाँ भी जागरूक हो जाती हैं नाना वनस्पतियाँ मानो देखो उसी के प्रकाश में परिपक्व हो जाते हैं वह उसी को पान करते हुए स्थावर, समस्त सृष्टि मानो उसी में रत्त हो करके और अग्नि में प्रकाशमान हो जाते हैं। जंगम, स्थावर बेटा! प्रत्येक सृष्टि का जो व्यवधान हो रहा है चाहे वह समुद्रों में गमन करने वाली सृष्टि हो, चाहे वह वायु मण्डल में हो, चाहे वह मानो उसके अन्तर्गत दे करके लोक लोकान्तरों में हो सूर्य उनका प्रकाशक बना रहता है।

मानो देखो यह सूर्य ही—गौ नाम का पशु है और गौ नाम के रीढ़ के विभाग में एक सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है और जैसे ही सूर्य उदय होता है मानो उस नाड़ी का ऊर्ध्वा मुख हो जाता है और वह उन परमाणुओं को अपने में ग्रहण करने लगती है जिन परमाणुओं में ब्रह्मे देखो जो स्वर्ण के परमाणु हैं वह जिन किरणों में स्वर्ण के परमाणु होते हैं उनको वह अपने में ग्रहण कर लेती है। इसीलिए गौ नाम का जो पशु है उसके मानो दुग्ध में पीत वर्ण होता है, उसके घृत में पीत वर्ण होता है क्योंकि उसमें स्वर्ण की मात्रा विशेष पाई जाती है, प्राप्त होती रहती है। आयुर्वेद आचार्यों ने बेटा! इसके ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। आयुर्वेदा आचार्यों ने बेटा! बहुत सी अग्नियों का वर्णन किया है परन्तु देखो वह तरंगें अप्रतम् देखो सूर्य की किरणों के साथ गमन करती रहती हैं। यह सूर्य हमारा प्रकाशक है और प्रकाश के देने वाला है। नाना प्रकार की वनस्पतियाँ परिपक्व होती हैं और पृथ्वी को जब तक जब पृथ्वी सूर्य की ऊर्ज्वा में तपायमान होती है तो यही नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म दे करके बेटा! देखो मानव अपने में प्रसन्न युक्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो ऋषि अपने में मौन होने लगे और उन्होंने कहा कि मैंने तो ऐसा ही पाया है कि प्रकाश का जो पुञ्ज है वह सूर्य कहलाता है।

चन्द्रमा का प्रकाश

मेरे प्यारे! जैसे वह शान्त होने लगे तो रम्भेश्वरी ने और राजा ने पुनः यह प्रश्न किया प्रभु वेदमन्त्र कहता है यजसुतम ब्रव्हे वर्णनं ब्रहे हे भगवन् देखो जब यह सूर्य नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक

है? उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या जब यह सूर्य नहीं होता तो हम चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह चन्द्रमा प्रकाश का द्युतक है, प्रकाश को देने वाला है, धीमा-धीमा यह प्रकाश देता है जिसके प्रकाश में मानव अपनी क्रियाओं से युक्त होकर के क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। मानो यह चन्द्रमा है जो मानव को जीवन देता है, अमृत देता है। जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो माता के गर्भ में जैसे ही शिशुओं का प्रवेश होता है उसी समय बेटा! चन्द्रमा अमृत देना प्रारम्भ करता है, सूर्य प्रकाश देता है, वायु देखो अग्नि उसे अमृतम् देखो ऊष्ण बना देती है और तरलत्व मानो देखो जल उसका आसन और ओढ़न बना रहता है मानो देखो अमृतम् यह अम्ब्रे ब्रहा वायु प्राण देता है। मेरे पुत्रो! देखो सब देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। हे मेरी भोली माँ तुझे ज्ञान नहीं होता कौन तेरे गर्भस्थल में रक्षार्थी बना हुआ है, कौन देवता है जो देवत्व को धारण करा रहा है। निर्माण करने वाला वह परमपिता परमात्मा है। जो माता के गर्भस्थल में जब निर्माण होता है तो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है।

वाह रे मेरे प्रभु तू कितना विज्ञानवेत्ता है कहीं मानो देखो बुद्धि का निर्माण होता है। बुद्धि के कई प्रकार जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती हैं। मेरे प्यारे! देखो इसी के आँगन में मुनिवरो! देखो मनस्तत्त्व है, प्राणत्व है और एक लघुमस्तिष्क में मानो देखो हृदय रहता है, एक हृदय मुनिवरो! देखो शरीर के मध्य भाग में रहता है। वह परमपिता परमात्मा रचनाकार है और रचना कर रहा है परन्तु मेरी भोली माँ को कोई प्रतीत नहीं कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है वह प्रभु कितना निकटतम रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो विचार यह चन्द्रमा अमृत के देने वाला है, यह देवत्व कहलाता है। यह ही मुनिवरो! देखो चन्द्रमा देखो अमृते व्रताहा यह सूर्य से ऊर्ज्वा ले करके समुद्र के समीप जाता है, समुद्रों से जलों का उत्थान करता है और उत्थान करके

उसी को बेटा! अमृत बना करके मेघ मण्डलों के सहयोग से यह वृष्टि प्रारम्भ कर देता है। मेरे पुत्रो! देखो जब वृष्टि हो जाती है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है, प्रत्येक मानव अपने में हर्ष ध्वनि करने लगता है।

विचार आता है कि यह चन्द्रमा हमें अमृत देता है। माता की रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है जब माता की चाह को करते उसमें चन्द्रमा की कान्ति को मानो देखो रसों के द्वारा चला जाता है उसी का समन्वय पुरातत्व नाम की नाड़ी से होता है अमृत का और उसी से मानो पुरातत्व नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है वहाँ से पंचम नाड़ी चलती है और पंचम नाड़ी से ही मुनिवरो! देखो नाभि का नाभि से समन्वय होता है। मेरे प्यारे! देखो माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो नाभि से नाभि का समन्वय हो करके अमृत को पाया जा रहा है, नाना नाड़ियों के द्वारा चन्द्रमा का अमृत प्राप्त हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार चन्द्रमा की विवेचना की और यह कहा कि यह चन्द्रमा ही तो मानो अमृत को बिखरे देता है, नाना वनस्पति अमृतता को प्राप्त करते हैं।

देखो, पूर्णिमा का जब दिवस आता है वैद्यराज जानते हैं **आयुर्वेदाचार्य की बहुत सी औषधि इस प्रकार की हैं जो मानो देखो पूर्णिमा के दिवस उनका प्रादुर्भाव होता है अमावस के दिवस वह पूर्ण हो जाती हैं** परन्तु देखो शुक्ल पक्ष में उनका व्यवधान होता है। मेरे पुत्रो! मैं आयुर्वेद के ऊपर तुम्हें विचार देने नहीं आया हूँ केवल यह क्या नाना प्रकार का वनस्पति विज्ञान इसी से उत्पन्न होता है वह आयुर्वेदाचार्य जानते हैं।

तारामण्डलों का प्रकाश

मेरे पुत्रो! देखो ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी विवेचना प्रगट की तो उस समय जब वह मौन होने लगे, तो माता रम्भेश्वरी और राजा जनक ने कहा हे ऋषिवर! वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है। परन्तु जानना

चाहते हैं कि जब यह चन्द्रमा भी नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक बना हुआ है? उन्होंने कहा राजन् जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो धीमा-धीमा प्रकाश इन तारामण्डलों का आ रहा है। यह तारामण्डलों का प्रकाश है मानो देखो अन्धकार छाया हुआ है वह जाना चाहता है परन्तु वह तारामण्डलों के प्रकाश में अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है और पगडण्डी का वह पथ प्रदर्शक बन जाता है अपने मार्ग को प्राप्त कर लेता है यह मानो तारामण्डलों का प्रकाश है।

मेरे प्यारे! देखो, विज्ञानवेत्ताओं ने जब विज्ञान के ऊपर अन्वेषण किया यहाँ बेटा! देखो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने और महर्षि भारद्वाज इत्यादियों ने इसके ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। महर्षि विश्वामित्र के यहाँ जब धनुर्याग होता था वहाँ भी प्रायः इस प्रकार का अनुसन्धान होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि की यज्ञशाला में, विज्ञानशाला में जब वह प्रवेश हुए तो जब वह गणना करने लगे, वह पृथ्वियों की गणना करने लगे तब उनकी विज्ञानशाला में बेटा! देखो तीस लाख पृथ्वियों की गणना की गई। मेरे प्यारे! वह तीस लाख पृथ्वियाँ जब एक समूह बन करके बेटा! इतना विशाल यह सूर्य मण्डल है जिसमें मुनिवरो! देखो ऐसी-ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ उसमें समाहित हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया, उन्होंने कहा हे राजन् देखो इतना विशाल यह सूर्य मण्डल है परन्तु जब सूर्य की हम गणना में लगते हैं सूर्यम् ब्रह्मे एक सहस्र सूर्य मानो इतना विशाल एक बृहस्पति मण्डल जिसमें एक सहस्र सूर्य इसमें समाहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो वह इतना विशाल मण्डल है और एक सहस्र बृहस्पति मण्डलों का मुनिवरो! देखो ब्रह्मणे व्रतम् ब्रव्हा कृतम् देवाः मेरे प्यारे! वेद का वाक् कहता है एक सहस्र बृहस्पति मेरे प्यारे! देखो आरूणी मण्डल में समाहित हो जाते हैं और आरूणी मण्डल इतना विशाल मण्डल है परन्तु एक सहस्र आरूणी मण्डल ध्रुव मण्डल में समाहित हो जाते हैं। एक सहस्र ध्रुव मण्डल मेरे प्यारे! देखो स्वाति नक्षत्र में ओत-प्रोत हो जाते हैं, एक सहस्र स्वाति नक्षत्रः

पुष्प नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्र पुष्प नक्षत्रः मूलकेतु नक्षत्र में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र मूलकेतु नक्षत्र मेरे प्यारे! मौन केतु मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं एक सहस्र मौनकेतु मण्डल मेरे प्यारे! देखो वृहीत लोक में प्रवेश हो जाते हैं, एक सहस्र वृहीत मण्डल मेरे पुत्रो! देखो अमृतम् ब्रह्मा गन्धर्वा मम ब्रहे वह गन्धर्वः में प्रवेश कर जाते हैं। तो गन्धर्व बेटा! देखो इस माला के मनको का अन्तिम मानो मनका कहलाता है बेटा। तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार वेद का ऋषि वर्णन करने लगा तो मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा हे राजन् इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बन जाता है। इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल है और एक अरब पचानवे करोड़ नवासी लाख उनचासवीं हजार और पाँच सौ बावन के लगभग मेरे प्यारे! इतने सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बनती है। इतनी विशाल एक आकाश गंगा है आकाशमभूतम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम् देवत्वाऽम्। मेरे प्यारे! देखो वेद का उद्गीत गाने वाला कहता है क्या इतने सौर मण्डलों की ऐसी-ऐसी आकाश गंगाएँ मेरे प्यारे! देखो प्रभु के राष्ट्र में अनन्त हैं। एक अरब नवासी करोड़ उनचास लाख और पाँच सौ बावन के लगभग इतनी आकाश गंगाओं की बेटा! एक निहारिका बन जाती है और पौने दो अरब निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो ऋषिवर यहाँ आ करके मौन हो जाते हैं वह कहते हैं यम ब्रह्मा वर्णम् देवत्वाऽम् अमृतम् ब्रहे यह परमात्मा का अनन्त ब्रह्माण्ड है, इस ब्रह्माण्ड के ऊपर हम विशेष चर्चा ने देते हुए। मेरे प्यारे! देखो ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या हे राजन् तुम जान गये होगे तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है उसी प्रकाश से हम अपनी पगडण्डियों को ग्रहण कर लेते हैं वह हमें पथ दर्शक करा देते हैं।

अग्नि का प्रकाश

मुनिवरो! जब ऋषि मौन होने लगे तो राजा जनक ने कहा हे राजन् अमृतम् ब्रह्मे देखो राजा नाम ब्रव्हा कृतम् हे प्रभु! आप तो राजाओं

के भी धिराज हैं क्योंकि ऋषि हैं और ऋषि राजाओं के भी राजा होते हैं। हे प्रभु हम यह जानना चाहते हैं जब यह मानो तारामण्डल नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक है? उन्होंने कहा जब यह तारामण्डल नहीं होता तो हे राजन् हम मानो अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं जो अग्नि काष्ठ में रमण करने वाली। हमारे **वैदिक आचार्यों ने बेटा! चार प्रकार की अग्नि का व्यवधान किया है।** सबसे प्रथम अग्नि का नाम गार्हपत्य है और देखो गार्हपत्य नाम की अग्नि है और गृहपत्य है, वैश्वानर और मुनिवरो! देखो आहवनीय चार प्रकार की अग्नियों का व्यवधान किया है। जिस गार्हपत्य नाम की अग्नि में ब्रह्मचारी तपता है, गृहपत्य नाम की अग्नि में माता-पिता, पति पत्नी तपा करते हैं और मुनिवरो! देखो वानप्रस्थ देखो आवन देखो वैश्वानर नाम की अग्नि में तपते हैं। **आहवनीय नाम की अग्नि में बेटा! ब्रह्मवेत्ता, महापुरुष तपा करते हैं।**

विचार आता है यह अग्नि जब इसके ऊपर विचार-विनिमय होता है तो **आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! पच्चासी प्रकार की अग्नि का व्यवधान किया है।** जब पच्चासी प्रकार की अग्नियों को स्वीकार किया गया तो यही अग्नि जब वैज्ञानिकों के कुल में पहुँची तो **वैज्ञानिकों ने बेटा! अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का चयन किया है।** यही अग्नि है बेटा! जो शब्द को द्यौ में प्रवेश करा देती है। यही अग्नि है मेरे प्यारे! देखो जो अणु और परमाणुओं को भ्रमण करा देती है, यही अग्नि है जब परमाणु का विभाजन होता है तो उसमें एक-एक सृष्टि दृष्टिपात होने लगती है। आज मैं बेटा! दूरी न चला जाऊँ यह प्रभु का विज्ञान बड़ा अनन्तमयी माना गया है। आज मैं इस विज्ञान के युग ने नहीं ले जा रहा हूँ। विचार-विनिमय केवल यह वेद का ऋषि, वेद का मन्त्र कहता है क्या हम अग्नि को जानने वाले बने। यह अग्नि जब आयुर्वेदाचार्य इसके ऊपर विचार-विनिमय करते हैं तो पच्चासी प्रकार की है और जब वैज्ञानिकजन इसके ऊपर अनुसन्धान करते हैं तो मानो यह अरबों-खरबों प्रकार की है।

यही है जो शब्द को दूरी पहुँचा देती है। बेटा! एक क्षण समय में मानो यही **अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके शब्द बेटा! देखो मानो देखो एक हजार नौ सौ अमृती वृत्तियों में बेटा! यह पृथ्वी का भ्रमण कर लेता है,** यह ब्रह्माण्ड का व्यापक स्वरूप धारण कर लेता है। तो विचार आता रहता है मुनिवरो! देखो इस समय वह शान्त हो गये। अमृताम् भूतम् ब्रह्मा वर्णे हे प्रभु यही अग्नि ब्रह्मा अग्नि बन करके रहती है जिसमें मानो देखो ब्रह्म का ब्रह्मवेत्ता अपने में बखान करते रहे हैं।

शब्द का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो राजा ने कहा हे प्रभु आप तो अनन्तमयी हैं। भगवन्! मैं जानना चाहता हूँ कि जब यह अग्नि नहीं होती तो कौन प्रकाश का द्युतक है? उन्होंने कहा हे राजन् जब मानो अग्नि नहीं होती तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। एक मानव देखो मार्ग में चला जा रहा है अन्धकार छाया हुआ है परन्तु अन्धकार नष्ट हो रहा है और वह अन्धकारम् ब्रह्मे ब्रव्हे और वह भयँकर वन में चला जाता है। वह कहता है कि अरे है कोई मार्ग चेताने वाला उस समय द्वितीय जो मार्ग में जो स्थिर है प्राणी वह कहता है आ जाओ मैं मार्ग में स्थिर हूँ। तो बेटा! उसके शब्द के प्रकाश से अपने पथ को वह ग्रहण कर लेता है वह पथप्रदर्शक बन जाता है शब्द के प्रकाश से।

यही शब्द है बेटा! देखो जब ऋषि-मुनि शान्त मुद्रा में रात्रि के काल में जब प्रभु का ध्यानावस्थित करते हैं तो बेटा! परमाणुओं का संघर्ष होता रहता है। वह रात्रि के काल में परमाणुओं के संघर्ष को वह अपने में ग्रहण करते रहते हैं। वही साधक जब अग्रणीय बनते हैं तो वह लघु मस्तिष्क में अपने शून्य को ले जाते हैं वहाँ एक अनहद नाम की ध्वनि होती रहती है। जो अनहद नाम की ध्वनि में बेटा! जो साधक रत्त हो जाता है बेटा! वह परमात्मा के सूक्ष्म जगत में प्रवेश

हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो अमृतम् ब्रह्मा वर्णस्सुतेः इसी प्रकार देखो साधक अपनी साधना कर रहा है।

पाण्डित्व इन्हीं शब्दों के कारण वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता रहता है, वेदमन्त्रों के ऊपर देखो उसकी ही मीमांसा करता रहता है और विचार-विनिमय करता हुआ मानो देखो वह पाण्डित्व बन जाता है, उन्हीं शब्दों के कारण पाण्डित्व कहलाता है। वही शब्द ध्वनि है जो अन्तरिक्ष में बेटा! देखो भ्रमण कर रही है। वही ध्वनि है जो बेटा! देखो अग्नि अमृतम् धारम ब्रव्हे कृतम् वह बेटा! देखो अग्नि को अब अपने में धारण करती रहती है। उसी देखो, जब ध्वनि आती रहती है एक परमाणु के मध्य से जब ध्वनि आती है तो ऋषिजन वैज्ञानिक हो करके उसका विभाजन करते हैं तो बेटा! एक-एक परमाणु में से एक-एक सृष्टि का जन्म हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने बेटा! देखो इसके ऊपर बहुत अन्वेषण किया है। वह, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे राजन् जब यह मानो देखो प्रकाशाम् भवतप्रहे हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ध्वनि पर ध्वनि आ रही है, ध्वनियों को श्रवण कर रहे हैं उन ध्वनि में अपनी ध्वनि को प्रवेश कर जाते हैं वही ध्वनि मानो देखो मानव अपने में धारयामि बन जाता है। ध्वनि से ही बेटा! देखो मानव के आकार को जानने लगता है, ध्वनि के कारण ही शब्द से ही बेटा! देखो अपनी प्रियता को अपने प्रिय में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा हे राजन् यह शब्द ही हमारे प्रकाश का द्युतक है, इस प्रकाश के कारण ही मानो देखो हम प्रकाशमान होते रहते हैं। अरे! वेदमन्त्रों को ध्वनि से गान गाते हैं कि जटापाठ में गाते हैं, कहीं धन पाठ में गाते हैं, कहीं उदात्त, अनुदात्त में गान गाते हैं परन्तु वह ध्वनि पर ध्वनि आ रही है मानव उसमें मानो पाण्डित्व को अपने में ग्रहण कर रहा है।

जब ऋषि ने बेटा! इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा प्रभु यह शब्द नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक है? मेरे पुत्रो! देखो

जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन समब्रहे देखो व्रतम् जब राजा ने यह प्रश्न किया तो ऋषि ने कहा राजन् तुम प्रश्न करते चले जा रहे हो परन्तु यह प्रिय नहीं है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का निर्णय

मैं तुम्हें अन्तिम निर्णय देता हूँ कि जब मानो यह प्रकाश नहीं होता, शब्द का प्रकाश नहीं होता तो **हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाते हैं।** यह आत्मा इस प्रकाश का द्युतक है, आत्मा के प्रकाश से हम प्रकाशमान होते हैं। आत्मा ही हमारे जीवन का अवृत कहलाया जाता है। जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाता है अरे! इस समय सूर्य भी अपना प्रकाश दे रहा है, मानव के नेत्रों के भी गोलक ज्यों के त्यों बने हुए हैं परन्तु शरीर में एक आत्मा नहीं है अरे मानव क्यों नहीं जागरूक हो जाते, क्योंकि आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है। चन्द्रमा अमृत दे रहा है मानो कान्तियाँ दे रहा है एक आत्मा इस शरीर में नहीं है, चन्द्रमा मानो देखो कान्ति से मानव शून्य हो गया है। मेरे प्यारे! देखो अग्नि लोक लोकान्तरों की माला बनी हुई है, आकाश गंगाओं की माला बनी हुई है और अवन्तिकाओं की माला बनी हुई है, निहारिकाओं की माला बनी हुई है परन्तु देखो इस शरीर में आत्मा नहीं है अब ये मानव क्यों नहीं प्रकाशमान हो रहा है? मेरे प्यारे! देखो आत्मा इस प्रकाश का दूत है, प्रकाश का दूतक है, अमृत है। तो मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा हे राजन् देखो वह अग्नि अपना प्रकाश दे रही है, माता अग्नि से, तारतम्य देने वाली अग्नि से प्रकाश कर देती है परन्तु देखो आत्मा शरीर में नहीं है अरे क्यों नहीं प्रकाश से प्रकाशित हो जाते? मेरे प्यारे! देखो अन्तरिक्ष में शब्द ज्यों का त्यों निहित रहता है परन्तु देखो शब्द से शब्द आ रहा है, ध्वनि बन करके आ रहा है अरे पुकार रहा है परन्तु आत्मा नहीं है क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते, क्यों नहीं मानो देखो शब्द ध्वनि आती? विचारवेत्ता कहते हैं कि आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है।

आत्मा को जानने की प्रेरणा

अरे मानव संसार में आने का तेरा अभिप्राय यह है कि इस गृह में रहने वाला आत्मा है, मानव तू उसको जानने का प्रयास कर। मेरे प्यारे! यह मानव का जो पंच लोक वाला शरीर तुझे प्राप्त हुआ है यह पंच महाभूत वाला मण्डल है। जब महर्षि जालवी से यह प्रश्न किया कि आत्मा का लोक क्या है तो महर्षि जालवी ने कहा कि आत्माम् भूतम् पंच लोकाम् व्रते देवाः यह पंच महाभूतों का जो मानव का शरीर है यह आत्मा का लोक है, आत्मा इसी में वास करता है। आत्मा मानो चित्त के मण्डल को ले करके चला जाता है परन्तु शव रह जाता है, शरीर तो यह प्रकाश से शून्य हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो वेद के ऋषि ने कहा हे मामूब्रहे राजन् मानो देखो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। आत्मा को जानने का प्रयास करो, तुम महा प्रकाशमान हो जाओगे। तो मेरे प्यारे! देखो आत्मा को जानना चाहिए। तो विचार, वैज्ञानिकों ने, दार्शनिकों ने बेटा! जब इसके ऊपर नाना प्रकार की टिप्पणियाँ प्रारम्भ की, विचार-विनिमय करने लगे तो आत्मा पर आ करके शान्त हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो यह शरीर पंच महाभूतों का लोक है, इसमें अग्नि है, आपो है और देखो वायु अमृते गतम् ब्रव्हा मुनिवरो! तीन प्रकार के परमाणु हैं और मुनिवरो! देखो वायु अमृतम् देखो गुरुत्व, तरलत्व, तेजोमयी तीन प्रकार के परमाणु हैं जिसके ऊपर सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है और मुनिवरो! देखो वायु परमाणुओं को गमन कराती है, अन्तरिक्ष में गमन करते रहते हैं। तो यह पंचमहाभूतों वाला यह मेरे प्यारे! यह लोक है जिसमें आत्मा अपना वास करता है। हे मानव ब्रह्मणे याज्ञवल्क्य ने कहा राजन् तुम पंच महालोकों वाले भूतम् ब्रह्मा पंचभूत वाले लोक को जानो, इसमें आत्मा अपना वास करता है। तुम आत्मा को जानने का प्रयास करो देखो, तुम्हें सुखद प्राप्त हो जायेगा।

आत्मा को जानने का मार्ग

मेरे प्यारे! देखो आत्मा को जाना कैसे जाए? तो बेटा! मन्त्र प्राणं ब्रह्मे लोकाम् पंचमहाभूतों को जानना होगा और उसके पश्चात् आत्मा

का व्यवधान होगा। मेरे प्यारे! देखो आत्मा में अमृतम् प्रकाशाम् वह अमृतमयी प्रकाश में तुम चले जाओगे।

विचार-विनिमय क्या आज मैं तुम्हें बेटा! विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और परिचय यह है कि तुम अपनी आत्मा को जानने का प्रयास करो। आत्मा ही मानो देखो प्रकाश का द्युतक है, यही प्रकाश है। जब यह आत्मा चला जाता है तो नेत्र भी शान्त हो जाते हैं यह वह अग्नि का व्यवधान है। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए एक दूसरी कड़ी को जानते हुए अन्त में देखो तुम ब्रह्म के समीप चले जाओगे, आत्मा के प्रकाश में रत्त हो जाओगे। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ऋषि राजा जनक और उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने ऋषि के चरणों को स्पर्श करते हुए कहा कि प्रभु आप को धन्य है आप ने हमें अन्धकार से प्रकाश में पहुँचा दिया है, आपको धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! यह उच्चारण करके वह मौन हो गये, सान्तवना को प्राप्त हो गये। तो यह है बेटा! आज का वाक्, अब वेदमन्त्रों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् गतम् मनम् गता.....

दिनाँक : 23 जुलाई, 1992

स्थान : देवी मन्दिर, किठौर, मेरठ

।। ओ३म् ।।

यौगिक मार्ग

जीते रहो,

देखो मुनिवरो ! अभी-अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ, आज हम पुनः की भाँति तुम्हारे समक्ष कुछ वेदपाठ गा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, जिन वेदमन्त्रों का हमने पाठ किया। आज का पाठ हमें कौन से विशाल मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा था, आज हमें पुनः से उन वेदमन्त्रों की प्रेरणा और उनके विभिन्न रूपों को अपने जीवन में धारण कर लेना चाहिए। **हमारे यहाँ मूल वेद चार माने जाते हैं,** जैसा कल के आदेशों में और इससे पूर्व के वाक्यों में भी कहा है। परन्तु उन चार वेदों को जैसा हमारा ऋषि-मुनियों का कथन है, काल आते-आते 1127 संहिताएँ (शाखायें) कहलाईं। आज हमें इस विवाद पर नहीं जाना कि यह 1127 संहितायें कैसे और क्यों बनीं, आज तो केवल यह विचारना है कि आज का पाठ क्या कह रहा था।

वेद का गौरव

मुनिवरो ! आज हम उन्हीं वेदमन्त्रों का पाठ कर रहे थे जिनमें ऋषि-मुनियों का एक बड़ा ऊँचा गौरव है, संसार का गौरव है, ज्ञानियों और वैज्ञानिकों का गौरव है। इन वेदमन्त्रों में सब ही कुछ विराजमान है। इन वेदमन्त्रों को पान करते हुए हम ऋषि बन जाते हैं, और इनमें जो ज्ञान विज्ञान है उसको अपने जीवन में धारण करते हुए अन्तःकरण को इतना पवित्र, शुद्ध चेतन्य बना लेते हैं कि हम अपना मिलान उस शुद्ध पवित्र चैतन्य परमपिता परमात्मा से कर लेते हैं, यह हमारे यहाँ विशेष विज्ञान माना गया है।

दो प्रकार का विज्ञान

मुनिवरो ! हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान कहा गया है एक

भौतिक विज्ञान और दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान जैसा मैंने कल के आदेश में कहा था और आज के वेद पाठ में भी बुद्धि का बड़ा सुन्दर विवेचन और राष्ट्र के लिए भी नाना विवरण आ रहा था। हमारे यहाँ दो प्रकार के राष्ट्र हैं—एक भौतिक राष्ट्र कहलाता है दूसरा आध्यात्मिक राष्ट्र। हम दोनों राष्ट्र को विचारना है और दोनों को ऊँचे शिखर पर पहुँचा देना है। जहाँ उसको कोई न छू सके।

मुनिवरो ! **भौतिक विज्ञान** वह कहलाता है जिसमें नाना प्रकार के प्रकृति से अणुओं को, महा अणुओं को एकत्रित किया जाता है और उनसे नाना प्रकार के यन्त्रों का आविष्कार किया जाता है। और जिस प्रकार राजा के यन्त्रों का आविष्कार किया जाता है। और जिस प्रकार राजा रावण के पुत्र नरान्तक तक ने बड़े-बड़े विशाल यन्त्रों का आविष्कार किया। भगवान् राम ने भी और द्वापर काल के भीम के पुत्र घटोत्कच तक ने, अर्जुन ने और महाराज कृष्ण ने बड़े-बड़े यन्त्रों का आविष्कार किया। आज हमें उस भौतिक विज्ञान को भी जानना है।

मुनिवरो ! इस भौतिक विज्ञान से भी **ऊँचा विज्ञान** है जिस विज्ञान से इस संसार के रचयिता को, जिसने हमारे मनुष्य शरीर को रचा है, पा लिया जाता है। मैंने इससे पूर्व कई स्थलों में कहा है कि प्रभु ने किस ऊँची गति से मनुष्य शरीर को रचा है—कैसे सुन्दर चक्षु, ध्राण, वाक, रसना और एक-एक इन्द्रिय ऐसी विशाल, वह प्रभु कितना बड़ा वैज्ञानिक है जिसने इस संसार को, लोक-लोकान्तरों को रचाया। उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम **आध्यात्मिक विज्ञान** को जानते हुए इस संसार-सागर से पार हो जायें।

मुनिवरो ! हम यह नहीं कहते कि आध्यात्मिक विज्ञान को ही जानो, भौतिक विज्ञान को भी जानो जिससे राष्ट्र की रक्षा होती है, राष्ट्र का कल्याण होता है, राष्ट्र में नाना सामग्री होती है। मनुष्य अपने मस्तिष्क से और अपने मनोविज्ञान से प्रकृति की देन को जाना करता है—अणु, महाअणु, त्रिसरेणु और महात्रिसरेणु को एकत्रित करते हुए नाना

प्रकार के यन्त्रों को आविष्कार किया जाता है। ऋषियों के आदेशों से हमें प्राप्त होता है कि रावण के पुत्र नरान्तक ने अपने सूक्ष्म से जीवन में इस महान् विज्ञान को जानकर उन यन्त्रों को जाना जिस पर विराजमान होकर चन्द्रमा की यात्रा किया करता था।

मुनिवरो ! एक समय राजा रावण के पुत्र नरान्तक देव-ऋषि नारद के द्वारा जा पहुँचे, उस समय और भी ऋषि जैसे महर्षि विभाण्डक, महर्षि अत्रि और महर्षि पिप्पलाद आदि भी वहाँ थे। नरान्तक ने कहा कि प्रभु आप तो नित्यप्रति आत्मा-परमात्मा की चर्चा करते हैं परन्तु मैंने तो विज्ञान को जाना और महान् उन यन्त्रों का आविष्कार किया है जिनमें विराजमान होकर चन्द्रमा की यात्रा कर आता हूँ। उस समय देव ऋषि नारद ने कितना सुन्दर उत्तर दिया कि हे नरान्तक ! तुमने केवल इसी विज्ञान को जाना है परन्तु हमने उस विज्ञान को जाना है जिससे हम सूर्य लोक और ध्रुव लोकों की यात्रा किया करते हैं।

मुनिवरो ! वह कौन सा विज्ञान है जिससे महात्मा ध्रुव लोक में भ्रमण किया करते थे? वह कौन से विज्ञान हैं जिससे देव ऋषि नारद सूर्य लोक में रमण किया करते थे? आज हमें उस विज्ञान को विचारना है, भौतिक विज्ञान के साथ-साथ देव ऋषि नारद के विज्ञान पर जाना है।

मुनिवरो ! उच्चारण करते-करते दूर चले गये, वाक्य चल रहा था कि आज हमें भौतिक विज्ञान को भी ऊँचा बनाना है। नाना आविष्कारों को करना और अपने मनोविज्ञान से सब ही कुछ जानना है। हमारे मन की कितनी तीव्र गति है, हमारे वैज्ञानिकों ने मन की कल्पना करते हुए नाना प्रकार के यन्त्रों को जाना है जिन यन्त्रों से राष्ट्र का कल्याण किया करते हैं।

वैदिक संस्कृति से राष्ट्र का उत्थान

मुनिवरो ! मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी की प्रेरणा से प्रतीत होता चला जा रहा है कि हमें राष्ट्र के लिए क्या करना है। जितने भौतिक

वैज्ञानिक हैं, वेदों के प्रकाण्ड बुद्धिमान हैं, दार्शनिक हैं उन सबको राजा के द्वार जाना चाहिए और उस राजा का विरोध करना चाहिए जिस राजा के राष्ट्र में अपराधियों को दण्ड नहीं दिया जाता और उच्चारण करना चाहिए कि हे राजन् ! तू अपने राष्ट्र में उस महान् ऊँची संस्कृति को अपना, जिस संस्कृति से हमारा कल्याण है, जिस संस्कृति के द्वारा मानव में पवित्रता आती है। जिस राजा के यहाँ ऐसे आत्मिक बल वाले ब्राह्मण पुरोहित होते हैं वह राजा इन वाक्यों को अवश्य स्वीकार करता है।

मुनिवरो! देखो जिस समय मुझे महर्षि वशिष्ठ के राष्ट्र सम्बन्धी वाक्य स्मरण होते हैं तो प्रतीत होता है कि वह राजा दशरथ को विभिन्न स्थलों में प्रेरणा दिया करते थे और कहा करते थे कि हे राजन् ! आज तेरे राष्ट्र में जो संस्कृति है वह इसी प्रकार रहनी चाहिए। और यह उसी काल में रह सकेगी जब तुम्हारा एक-एक अंग और तुम्हारा हृदय ऊँची वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत होगा, तुम्हारा हृदय, तुम्हारी संस्कृति और संस्कृति तुम्हारा हृदय होगा।

मुनिवरो ! आज हमें उस ऋषि परम्परा को अपनाना चाहिए जिससे वास्तव में राष्ट्र का कल्याण होता है, मानव का उत्थान होता है।

मुनिवरो ! महाराजा रघु ने वानप्रस्थ ले करके अपने राष्ट्र का जो अनुभव था, उससे अपने पुत्र अजय को शिक्षा दी, अजय के दशरथ हुए, दशरथ को उन्होंने शिक्षा दी, और वह शिक्षा महर्षि वशिष्ठ भी देते चले आए। आज हमें ऋषि परम्परा को ऊँचा बनाना है, राष्ट्र के ब्राह्मणों को, बुद्धिमानों को व दार्शनिकों को चाहिए कि वह राजा से कहें—जो दुराचार कर रहा है कि हे राजन् ! यह संस्कृति तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं, तू वैदिक संस्कृति और ऋषि परम्परा को स्थापित कर जो राष्ट्र के लिए लाभदायक है और प्रजा इसके भाव से अपने को ऊँचा बना सकती है।

वेद के एक-एक मन्त्र में वह अमूल्य निधि है जिसको जान कर मानव का हर प्रकार से कल्याण होता है और वह संस्कृति मानव के हृदय में ऐसे ओत-प्रोत हो जाती है जैसे माता का प्रेम बालक के हृदय में ओत-प्रोत होता है जिस काल में माता अपने प्रिय बालक को अपनी लोरियों में आकर्षित करती है इसी प्रकार जब राजा माता के तुल्य और पिता के तुल्य अपने पुत्र रूपी प्रजा से प्रीति करने वाला और संस्कृति देने वाला हो तो वह पवित्र कहलाता है। उस राजा की नीति पवित्र कहलाती है जिसके राष्ट्र में अपराधियों को दण्ड दिया जाता हो, यदि राजा का पुत्र है और दुराचारी है तो राजा को चाहिए कि प्रजा के हित के लिए, संस्कृति और ऋषि परम्परा को ऊंची बनाने के लिए अपने पुत्र को भी नष्ट कर देना चाहिए।

आज हमें सबसे पूर्व बुद्धिमान बनना है, दार्शनिक बनना है, वैज्ञानिक बनना है और राजा से जाकर अनुरोध करना है कि हे राजन् ! तू अपने राष्ट्र की प्रजा को पवित्र बना, यह उसी काल में पवित्र बन सकती है जब तेरे राष्ट्र में अपराधियों को दण्ड दिया जायेगा।

मुनिवरो ! हम वाक्य उच्चारण करते हुए बहुत दूर चले गये, हमारा वाक्य चल रहा था भौतिक विज्ञान, आज हमें वास्तव में भौतिक विज्ञान को जानना चाहिए इससे राष्ट्र के द्वारा सामग्री होती है, विद्युत को जलों से आकर्षित किया जाता है, जल और विद्युत का प्रयोग करते हुए वैज्ञानिक राष्ट्र को आनन्दित कर देते हैं। आज हमें वास्तव में उस विज्ञान की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र की रक्षा हो। विद्या व संस्कृति वह हो जिससे प्रजा में सदाचार और शिष्टाचार की तरंगें हों।

मुनिवरो ! हमारे ऋषि-मुनियों की जो ऊँची परम्परा है उनका जो महान् वत है वह इस प्रकार है जैसे माता दुग्ध में घृत निकाल लेती है, उन्होंने भौतिक विज्ञान को जानते हुए उस उत्तम घृत को जो अग्नि से मिलान कर अग्नि को प्रज्वलित कर देता है उसको जानो, वह विज्ञान कौनसा है?

बुद्धि

आज देखो ! हमारे यहां चार प्रकार की बुद्धियों का विवरण आता है—बुद्धि, मेधावी बुद्धि, ऋतम्भरा बुद्धि और प्रज्ञा बुद्धि।

बुद्धि वह होती है जो हमें यथार्थ निर्णय देने वाली होती है जैसे आज हमारे नेत्रों ने या किसी ब्रह्मचारी ने किसी ब्रह्मचारिणी के दर्शनों को पाया या किसी ब्रह्मचारिणी ने किसी ब्रह्मचारी से प्राकृतिक सौन्दर्य को जाना तो उस समय उसके नेत्रों में एक महानता प्रकट होती है, नेत्रों में वह सत्ता कहाँ से प्राप्त हो गई जो हम प्राकृतिक सौन्दर्य को दृष्टिगोचर पाते चले जा रहे हैं? हमारे दार्शनिकों का कथन है कि हमारे नेत्रों के निचले भाग में एक यन्त्र है जिसको हम **पीला पटल** कहते हैं, उस पटल से पांच तन्मात्राएँ लगी हुई हैं तन्मात्राओं के पश्चात् यह मन विराजमान है, इस मन का सम्बन्ध बुद्धि से है जिससे यह यथार्थ निर्णय देते हैं।

इन्द्रियाँ जो भी कुछ कार्य करती हैं जैसे नेत्रों ने दृष्टिगोचर पाया, श्रोत्रों ने श्रवण किया, ध्राण ने जो कुछ सुगन्धि पाई वह सब विषय मन के द्वारा और बुद्धि के द्वारा पहुँचता है, बुद्धि उसका निर्णयात्मक उत्तर देती है और कहती है कि यह मेरी भोजाई है, यह जो प्राकृतिक सौन्दर्य है यह मेरे प्रभु का रचाया हुआ है। जब मानव के हृदय में विचार आ जाता है कि यह जितना सौन्दर्य मेरे नेत्रों के समक्ष है यह सब मेरे प्रभु का रचा हुआ है तो उस समय कोई भी इन्द्रियाँ किसी प्रकार का पाप नहीं कर सकतीं। हमें प्रभु को सर्वव्यापक मानकर उसके ऊपर विश्वास करना है। जब हम प्रभु को सर्वव्यापक कहते हैं परन्तु उस पर विश्वास नहीं होता तो हम कैसे जान लें कि आज हम कोई पाप नहीं करते। पाप से बचने के लिए सबसे पूर्व हमें उस विवेक की आवश्यकता है हमें प्रभु पर ऊँचा विश्वास हो जाए कि प्रभु हैं या नहीं, जब यह विश्वास और धारणा हो जाती है कि प्रभु है और सर्वव्यापक है तो इन्द्रियाँ किसी प्रकार का कोई पाप नहीं कर सकतीं।

मुनिवरो ! विषय चल रहा था कि बुद्धि का, बुद्धि यथार्थ निर्णय देने वाली है। आज हमें बुद्धि से निर्णय लेना है कि जिस सौन्दर्य को अपने मन पर ले जा रहे हैं, प्रत्येक इन्द्रिय उससे दूषित होती चली जा रही है और पाप में डुबकी लगा रही है मुनिवरो ! वह हमारे द्वारा कौनसी सूक्ष्मता है? वह विवेक की सूक्ष्मता है। तो मेरे आदि ऋषि मण्डल इसका नाम बुद्धि है जो यथार्थ निर्णय देती है।

मेधावी बुद्धि

मुनिवरो ! मेधावी बुद्धि उसको कहते हैं जिनके आने के पश्चात् मानव के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार जागृत हो जाते हैं। **मेधावी बुद्धि का सम्बन्ध अन्तरिक्ष से है।** यह जो वेदवाणी के वाक्य हैं अन्तरिक्ष में रमण करते रहते हैं। जिस विद्या को हमने किसी काल में पाया परन्तु मेधावी बुद्धि प्राप्त होने पर उस विद्या से, उन वेदमन्त्रों से सम्बन्ध हो जाता है और वह स्वतः प्रकट हो जाते हैं, इसका नाम मेधावी बुद्धि है। मेधावी बुद्धि अन्तरिक्ष में संसार के विज्ञान को देखा करती है कि यह संसार का विज्ञान और कौन-कौन सा वाक्य अन्तरिक्ष में रमण कर रहा है।

आज तुम्हें स्मरण होगा कि हमने आज से बहुत पूर्व काल में इन सँहिताओं का पाठ किया परन्तु इतने काल के पश्चात् भी हमारे स्मरण होती चली जा रही हैं और तुम्हारे समक्ष इन वेद ऋचाओं और सँहिताओं का प्रसार करते चले जा रहे हैं, इसका नाम मेधावी बुद्धि है। मेधावी बुद्धि उस विवेक का नाम है जब मानव संसार से विवेकी होकर परमात्मा के रचाये हुए तत्वों पर विवेकी होकर जाता है।

ऋतम्भरा बुद्धि

मुनिवरो ! बुद्धि का विवेकी और मेधावी बुद्धि का विवेकी बनकर के परमात्मा के रचाये हुए विज्ञान को जानता हुआ यह आत्मा ऋतम्भरा बुद्धि के द्वार जाता है। ऋतम्भरा बुद्धि उसको कहते हैं जब मानव योगी

और जिज्ञासु बनने के लिए और परमात्मा की गोद में जाने के लिए, लालायित होता है, उस समय मेधावी बुद्धि ऋतम्भरा बुद्धि बन जाती है। धारणा ध्यान-समाधि में संलग्न हो जाता है और संसार के इस प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने आधीन कर लेता है। **यह पांचों प्राण—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान—ऋतम्भरा बुद्धि वाले के अधीन हो जाते हैं।** अधीन करके जब योगी इन पांचों प्राणों की सन्धि कर लेता है तो यह आत्मा इन प्राणों पर सवार हो जाता है। जैसे मुनिवरो ! अश्व नाम घोड़े का है और मनुष्य उस पर सवार हो जाता है इसी प्रकार यह आत्मा प्राण रूपी अश्व पर सवार हो जाता है और सबसे पूर्व मूलाधार में रमण करता है।

मूलाधार चक्र

मेरे आदि ऋषियों का जैसे महर्षि गरुड़, महर्षि अत्रि और महर्षि लोमश आदि का कथन है कि देखो, मूलाधार में लगभग 6 ग्रन्थियाँ लगी हैं। इस मूलाधार को हम **स्वरित चक्र** भी कहते हैं। जब यह आत्मा मूलाधार में जाता है तो उस समय यह सब ग्रन्थियाँ स्पष्ट हो जाती हैं और इस आत्मा का प्राणों के सहित आगे को उत्थान होता है।

नाभि चक्र

आगे यह आत्मा उस स्थान पर जाता है जिसको हम नाभि चक्र कहते हैं इसमें 72 करोड़ नाड़ियों का समूह कहलाता है और लगभग 12 ग्रन्थियाँ स्पष्ट हैं। जब यह आत्मा यहाँ पहुंचता है तो यह सब ग्रन्थियाँ स्पष्ट हो जाती हैं।

हृदय चक्र

इसके पश्चात् आगे देखो गंगा, यमुना, सरस्वती आ जाती, आत्मा इसमें स्नान करता हुआ, आगे जाता हुआ हृदय-चक्र में जाता है जिसको हमारे यहाँ **स्वाधिष्ठान चक्र** भी कहते हैं, **रविनाथ चक्र** भी कहते हैं।

इसमें लगभग 24 ग्रन्थियों का समूह माना गया है यह सब ग्रन्थियाँ स्पष्ट हो जाती हैं।

कण्ठ चक्र

आगे यह आत्मा उस स्थान में जाता है जिसको कण्ठ चक्र कहते हैं, **उदान चक्र** भी कहते हैं, **ब्रह्मी नाम का चक्र** भी कहते हैं। इसमें लगभग 47 ग्रन्थियाँ लगी हुई हैं यह सब ग्रन्थियाँ स्पष्ट हो जाती हैं।

ध्राण चक्र

आगे चलता हुआ यह आत्मा ध्राण चक्र में जाता है जहाँ नाना ग्रन्थियाँ लगी हुई हैं। यह सब ग्रन्थियाँ भी स्पष्ट हो जाती हैं।

त्रिवेणी-स्थल

आगे चलकर यह आत्मा त्रिवेणी स्थल में जाता है जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों का मिलान होता है। ध्राण स्थल से ऊपर मस्तिष्क में देखो इन तीनों नाड़ियों का समूह होता है जिनको हमारे ऋषि-मुनियों ने इंगला, पिंगला और सुषुम्ना—तीनों नाड़ियों को गंगा, यमुना और सरस्वती भी कहा है। जिस स्थान पर इन तीनों नाड़ियों का सम्बन्ध होता है उसको हमारे यहाँ त्रिवेणी कहा जाता है। इस त्रिवेणी स्थान में यह आत्मा प्राणों सहित स्नान करता हुआ आगे को जाता है।

ब्रह्मरन्ध्र

इसके पश्चात् यह आत्मा ब्रह्मरन्ध्र में चली जाती है। शिष्यों का ऐसा कथन है कि जिस समय आत्मा ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचता है तो उस समय सूर्य का प्रकाश भी फीका रहता है। उस प्रकाश से आगे रीढ़ के भाग में जाकर कुण्डली जागृत हो जाती है, जागृत होने का नाम ही मुनिवरो देखो ! परमात्मा से मिलान है, इस आत्मा का परमात्मा से मिलान है।

प्रज्ञा बुद्धि

मुनिवरो ! उच्चारण कर रहे थे बुद्धि, मेधावी बुद्धि, ऋतम्भरा बुद्धि और प्रज्ञा बुद्धि के सम्बन्ध में। **प्रज्ञा बुद्धि उस ऋषि को प्राप्त होती है जो मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।** आज हमें प्रज्ञा बुद्धि के लिए प्रयत्न करना है, उस ऊँचे शिखर वाले विज्ञान में जाकर हम संसार के ज्ञान-विज्ञान को जान लेते हैं, प्रकृति के एक-एक कण को जान लेते हैं, आज हमें उस विज्ञान की याचना करना है।

प्रभु याचना

हे प्रभु ! हमें उस विज्ञान के मार्ग पर ले चल जिस विज्ञान में हमें वास्तव में बुद्धि प्राप्त होती है, जिस विज्ञान में जाकर हम इस प्रकृति को अपने आधीन बना करके इस पर शासन करें। हे प्रभु ! हमें उस ऊँचे विज्ञान पर ले चल जहाँ प्रभु हम तेरा गान गाते रहें। हे प्रभु ! हमें उस सृष्टि में ले चल जहाँ प्रभु आपका सूर्य अस्त नहीं होता। हे प्रभु ! हमें इस संसार की इतनी ऊंची आवश्यकता नहीं है जहाँ प्रातः सूर्य उदय होता है और सायँकाल को अस्त हो जाता है। प्रभु इस सूर्य की आवश्यकता नहीं। प्रभु ! उस सृष्टि की आवश्यकता है जिस सृष्टि में आपका ज्ञान रूपी सूर्य किसी प्रकार शान्त न हो सके।

वाक्य उच्चारण करते-करते बेटा ! हम बहुत दूर चले गये हैं, हमारा वाक्य कह रहा था कि हमें भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों को जान लेना चाहिए। महानन्द जी तुमने महात्मा ध्रुव का नाम तो अवश्य सुना होगा, वह केवल एक 'ओ३म्' के विज्ञान को जानकर, केवल एक वेदमन्त्र को जान कर वह ध्रुव लोक में रमण किया करते थे।

मेरे प्यारे ऋषि मण्डल ! आज हमें उस विज्ञान की याचना करनी है जिसे विज्ञान के लिए वेद प्रेरित कर रहा है। वेद का एक-एक मन्त्र हमें वह प्रेरणा दे रहा है जो हमारे जीवन को पवित्र और सुगन्धिदायक

बना देता है, उस सुगन्धि से पहुँचकर हमारे राष्ट्र का कल्याण, मानव का कल्याण और मानव की आत्मा का उत्थान होकर परमात्मा से मिलान हो जाता है।

आज का हमारा आदेश उच्चारण करता चला जा रहा था कि हमें दोनों प्रकार के विज्ञान को जान लेना चाहिए और दोनों विज्ञानों के ऊंचे शिखर पर जाकर ही वास्तव में हमारा कल्याण होगा। अब आज का हमारा यह आदेश समाप्त होने जा रहा है, शेष वार्ता कल होगी।

पूज्य महानन्द जी — "भगवन् ! कल आपका आदेश क्या होगा, आज का आदेश तो बड़ा ओजस्वी रहा।"

हास्य..... बेटा ! कल का कल देखा जाएगा, जैसे समय आयेगा उसके अनुकूल वाक्य उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जी — "अच्छा भगवन् !"

मुनिवरो। देखो कल हमारा देव ऋषि नारद और सनत् कुमार का सम्वाद प्रकट किया जायेगा। अब हमारा यह आदेश समाप्त हो गया है कल समय मिला तो शेष वार्ता इससे भी विचित्र होगी। अब कुछ वेदमन्त्रों का पाठ होगा इसके पश्चात् वार्ता समाप्त हो जायेगी। **आज का हमारा आदेश मानव के कल्याण के लिए, यौगिक बनने के लिए और भौतिक विज्ञान के लिए और राष्ट्र कल्याण के लिए, सब ही के लिए प्रेरित कर रहा था। अब वेदों का पाठ होगा।**

दिनाँक : 19 अप्रैल, 1964

स्थान : आर्य समाज जम्मू (सम्मिलित वार्षिक उत्सव)

।। ओ३म् ।।

श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा

मेरे प्यारे महानन्द जी ने आधुनिक संसार का कुछ निर्णय कराया और कहा कि आज का मानव दूसरों की निन्दा करने में बड़ा कुशल है परन्तु जहाँ अपने अवगुण देखने की चर्चा आती है तो वहाँ शान्त हो जाता है। मेरे प्यारे ऋषि मण्डल ! आज दूसरों की त्रुटि और निन्दा करने से पूर्व अपनी निन्दा करके देखो कि तुम्हारे द्वारा कितनी त्रुटियाँ हैं, कितने अवगुण भरे हुए हैं।

हम परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं या नहीं, ऐसा करने से यह संसार स्वर्ग बन जाता है? **आज संसार में हमें अपने उदर की पूर्ति करते हुए वह कर्म करने चाहिएँ जो कर्म हमारे साथ जाने वाले हों।** मुनिवरो ! इस सम्बन्ध में एक वार्ता, एक अलंकार हमारे स्मरण हो आया है, सुनो !

एक राजा थे, उनका राष्ट्र बड़ा पवित्र था, राष्ट्र में एक दूसरे का कोई ऋणी नहीं था। एक समय राजा पर्वतों से भ्रमण करते हुए अपने राष्ट्र में आ रहे थे तो उनके मन में एक कल्पना जागी कि अरे तू इतना महान् राजा है इतनी प्रजा का स्वामी है किन्तु तेरे द्वारा एक छड़ी भी नहीं। वह अपने राष्ट्र में पहुँचा और शिल्पकारों को बुलाकर कहा कि तुम मेरे लिए छड़ी बनाओ जो भुजों में सुशोभित हो। मुनिवरो ! सुना जाता है कि शिल्पकारों ने करोड़ों मणियों से गूँथ करके उस छड़ी को बनाया और राजा को अर्पित करते हुए कहा कि लीजिए भगवन् ! राजा को वह छड़ी बहुत प्रिय लगी।

एक समय वह पर्वतों पर भ्रमण करने के लिए जा पहुँचे। सायँकाल को नगर आ रहे थे तो उन्होंने देखा कि श्मशान भूमि में एक वैरागी महात्मा है। राजा उसके समीप पहुँचे और कहा कि हे

महात्मा ! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? चलो ! मेरे नगर में चलो। ऋषि ने उत्तर दिया महाराज ! आपके नगर में जो हैं वह ही एक दिन यहाँ आ जाएंगे, मैं वहाँ जाकर क्या करूँगा। राजा ने सोचा कि यह साधु तो बड़ा मूर्ख है और राजा ने कहा, अरे साधु ! ले इस छड़ी को ले और यह उसको दे देना जो तुमसे अधिक मूर्ख हो। साधु ने छड़ी को स्वीकार कर लिया और राजा अपने राष्ट्र में जा पहुँचे।

राजा अपने राष्ट्र का पालन करते रहे और करते-करते वह समय आ गया जब वह मृत्यु शय्या पर स्थिर हो गए, केवल मृत्यु में कुछ समय रह रहा था। श्मशान भूमि में रहने वाले साधु ने अपने योगबल से देखा कि आज राजा मृत्यु को प्राप्त होने जा रहा है। साधु उस छड़ी को लेकर राजा के समीप जा पहुंचे। राजा ने साधु को दृष्टिगोचर पाया और कहा, अरे मूर्ख साधु ! अभी तक तुमने यह छड़ी किसी को नहीं दी।

साधु ने कहा कि प्रभु ! मुझे अपने से मूर्ख कोई मिला ही नहीं जिसको मैं यह छड़ी देता परन्तु राजन् ! अबक आप कहाँ जा रहे हैं?

राजा ने उत्तर दिया कि मैं बहुत बड़ी यात्रा में जा रहा हूँ, यह प्रतीत नहीं कि मैं जाऊंगा कहाँ।

साधु ने कहा कि राजन् ! जब आप इतनी बड़ी यात्रा में जा रहे हैं तो कितनी सेना साथ ले जाएंगे?

राजा ने कहा कि अरे साधु ! मैं तो आपको मूर्ख कह चुका हूँ, अरे ! इस अन्तिम यात्रा में यह सेना मेरे साथ नहीं जाएगी।

साधु ने कहा कि राजन् ! सेना नहीं ले जाओगे तो यह मन्त्री तो अवश्य आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए और राष्ट्र की वार्ताओं का निर्णय करने के लिए साथ जाएगा।

राजा ने कहा कि अरे साधु ! तू तो बड़ा मूर्ख है, अरे इस यात्रा में यह मन्त्री भी साथ नहीं जाएगा।

साधु—यदि राजन् ! मंत्री साथ नहीं जाएगा तो द्रव्य तो अवश्यजाएगा, क्योंकि आपको खान-पान की आवश्यकता है जिसके लिए धन अनिवार्य है।

राजा—अरे मूर्ख साधु ! इस यात्रा में द्रव्य भी मेरे साथ नहीं जाएगा।

साधु—अरे राजन् ! यह पत्नी तो अवश्य जाएगी?

राजा—अरे महामूर्ख ! इस यात्रा में पत्नी भी मेरे साथ नहीं जाएगी।

साधु—पत्नी नहीं जाएगी तो पुत्र तो अवश्य जाएगा, मोह करने के लिए।

राजा—अरे ! यह भी मेरे साथ नहीं जाएगा।

साधु—अरे राजन् ! पुत्र नहीं जाएगा तो यह बड़े-बड़े गृह जो आपने बनाए हैं यह तो आपके साथ अवश्य जाएंगे?

राजा—अरे महामूर्ख ! यह गृह भी मेरे साथ नहीं जाएंगे।

साधु—राजन् ! आप विश्राम करने के लिए एक आसन तो अवश्य ले जाएंगे?

राजा—अरे ! यह भी साथ नहीं जाएगा।

साधु—राजन् ! फिर आपके साथ क्या जाएगा?

राजा—प्रभु ! मेरे साथ कुछ नहीं जाएगा।

मुनिवरो ! तब साधु ने छड़ी लेकर राजा पर आक्रमण कर दिया और कहा कि अरे ! ले अपनी छड़ी को, मेरे से मूर्ख तो तू है संसार में। अरे ! आज तक वह कर्म तो किए नहीं जो तेरे साथ जाते, जो कर्म जीवन भर करते रहे वह यहाँ के यहाँ रह गए। ले इस छड़ी को स्वीकार कर।

राजा ने साधु के इन वाक्यों का पान किया और कहा प्रभु ! मैं वह कर्म कभी नहीं किए जो आज मेरे साथ जाते, मुझे क्षमा करो, मैंने आपको सहस्त्रों समय मूर्ख कहा है, प्रभु ! मुझे क्षमा करो, मैं महापापी हूँ। मुनिवरो देखो ! ऋषि बड़े दयालु होते हैं, तथास्तु कह करके अपने आश्रम चले गए और राजा मृत्यु को प्राप्त हो गया।

उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि मानव को वह कर्म भी करने चाहिएं कि जब वह संसार से जाए तो वह कर्म भी उसके साथ जाएँ। इस भौतिक पिण्ड में आकर वह कर्म भी करो जो कर्म इस पिण्ड को त्यागते समय तुम्हारे साथ जाएं और आत्माओं में जाकर रमण करने वाले बनो।

वह कौन सा कर्म है?

मुनिवरो ! परमात्मा का चिन्तन करना, अपने सदाचार को स्थापित और प्रभु को सर्वव्यापक मान कर कोई पाप न करना।

पूज्यपाद-गुरुदेव

श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 29-8-2015, दिन शनिवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लाक्षागृह, बरनावा में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्‌गार

1. मानव को कार्य करने से पूर्व उसका महान विधान बना लेना चाहिए।
2. गम्भीरता उसी काल में आती है जब मानव अपनी त्रुटियों को देखने लगता है।
3. सबसे पूर्व अभिमान को त्यागना है।
4. संसार में वही मानव सुख पाता है जो किसी का बन जाता है।
5. यह मन प्रकृति से बनता है और प्रकृति के सुख दुःख को अनुभव करता है।
6. आज मानव को प्रत्येक इन्द्रिय पर अनुसन्धान करना है।
7. योगी बनने के लिए सबसे प्रथम अपने विचारों को यथार्थ बनाना है।
8. बिना त्याग व तपस्या के योगी बनना मानव का केवल स्वप्न मात्र है।
9. यौगिक क्रियाओं के लिए हमें सबसे पूर्व प्राणायाम की आवश्यकता है।
10. योगी बनने के लिए आज हमें धारणा, ध्यान, समाधियों में लय होना होगा।
11. आत्मा की दो महान् सत्ताएँ स्वाभाविक हैं—ज्ञान और प्रयत्न।
12. आत्मा का जो ज्ञान स्वाभाविक है उसको जानने के लिए वेद विद्या का प्रसार करना, वेद विद्या को ग्रहण करना पड़ेगा।
13. बिना शरीर के यह आत्मा एक क्षण भर भी नहीं रहता?
14. वेद वाणी का उच्चारण करना उसी काल में सफल होता है जब हम उसके अनुकूल अपने आचरण को बना लेते हैं।
15. अन्तःकरण वह स्थान है जिसमें मानव के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विराजमान रहते हैं।
16. जैसी भी यहाँ भावनाएं हों, जैसे भी कर्म करके जायेंगे उसी के अनुकूल हमें जन्म प्राप्त हो जाता है।
17. जिस पद के तुम अधिकारी हो या तुम्हें चुना गया है वह चाहे तुम्हारे लिए हानिकारक है परन्तु तुम्हारा कर्त्तव्य है कि उसका पूर्णरूपेण पालन करो। उसको लाभ-हानि न पहुँचाओ। यदि लाभ हानि पहुँचाओगे तो तुम्हें कोई भी लाभ प्राप्त न होगा।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएं

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के सत्रहवें जन्म दिवस, दिनाँक 7 जून, 2015 के शुभ उपलक्ष्य में प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1101 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री भारद्वाज जी गुड़गांव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनाएं देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गंगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी भी एक पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
   ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट 26-9-2014 को मिल गई है जो कि 2015-2016 से लागू है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	40.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 6)	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 7)	80.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 8)	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 9)	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 10)	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 11)	80.00
63.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 12)	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु दर्शन	50.00
66.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 13)	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः-

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मो. नं. : 09412888050
3. सुश्री नीरू अबरोल, के-3, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4, पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मो. नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110-मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मो. नं. 09899228860, 09871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मो. नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मो. नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	**1000 रुपये**
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	**1000 रुपये**
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	**1000 रुपये**
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**500 रुपये**
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	**500 रुपये**
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	**250 रुपये**
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	**200 रुपये**
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा, उत्तर प्रदेश	**125 रुपये**
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	**100 रुपये**
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	**100 रुपये**
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**101 रुपये**
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	**101 रुपये**

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

उद्‌बोधन

जब हम वेद की प्रतिभा को विचार-विनिमय करने लगते हैं तो कितना ही सँसार का विशेषज्ञ और व्याख्याता हो वह केवल सूर्य के एक सूक्ष्म से प्रकाश के तुल्य ही रहता है क्योंकि उसका ज्ञान अनन्त है और महान्‌ता से परणित है। आज जब हम प्रकृति में प्रभु का सन्निधान मात्र ही स्वीकार करते हैं और प्रकृति का स्वभाव उमड़ने लगता है परन्तु जब हम यह विचारते हैं कि मानव विज्ञान में क्या किसी भी आंगन में अभिमान्‌ का अधिकारी नहीं होता, वह अपने गौरव से यह नहीं उच्चारण कर सकता कि मैंने इस वस्तु को जाना है, उस पर वह अभिमान्‌ नहीं कर सकता उसे अधिकार ही नहीं है क्योंकि जो वस्तु मानव जानने का प्रयास करता है वह जो प्यारा देव प्रभु है वह इतना महान्‌ और अलौकिक है कि उसने उन वस्तुओं को तेरे विचारने से पूर्व उनका निर्माण कर दिया, उनको उत्पन्न कर दिया है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 43 : अंक : 514
जुलाई 2015

मूल्य :
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पञ्जी०
के लिए नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 41030481

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2015-2017
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-07-2015
Published on 5th day of the same month

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-07-2015
Published on 5th day of the same month